



Mr. SURAJ KUMAR

15 Mar 2003

04:08 PM

Ranchi

Model: Web-MyKundli

Order No: 120083401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 15/03/2003
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 16:08:00 घंटे
इष्ट _____: 25:23:45 घटी
स्थान _____: Ranchi
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:22:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:20:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:11:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 16:19:20 घंटे
वेलान्तर _____: -00:09:05 घंटे
साम्पातिक काल _____: 03:49:50 घंटे
सूर्योदय _____: 05:58:29 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:57:22 घंटे
दिनमान _____: 11:58:53 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 00:32:02 मीन
लग्न के अंश _____: 06:27:30 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: आश्लेषा - 2
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: सुकर्मा
करण _____: बालव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: डू-डूंगरमल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मीन

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1924	फाल्गुन	24
पंजाबी	संवत : 2059	चैत्र	2
बंगाली	सन् : 1409	फाल्गुन	30
तमिल	संवत : 2059	पंगुनी	1
केरल	कोल्लम : 1178	मीनम	1
नेपाली	संवत : 2059	चैत्र	1
चैत्रादि	संवत : 2059	फाल्गुन	शुक्ल 12
कार्तिकादि	संवत : 2059	फाल्गुन	शुक्ल 12

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 12
तिथि समाप्ति काल _____ : 24:26:30
जन्म तिथि _____ : 12
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुष्य
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 10:16:26 घंटे
जन्म योग _____ : आश्लेषा
सूर्योदय कालीन योग _____ : अतिगण्ड
योग समाप्ति काल _____ : 15:12:10 घंटे
जन्म योग _____ : सुकर्मा
सूर्योदय कालीन करण _____ : बव
करण समाप्ति काल _____ : 13:19:04 घंटे
जन्म करण _____ : बालव
भयात _____ : 14:38:55
भभोग _____ : 57:09:38
भोग्य दशा काल _____ : बुध 12 वर्ष 8 मा 10 दि

घात चक्र

मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : तुला
सूर्य _____ : सिंह
चन्द्र _____ : सिंह
मंगल _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

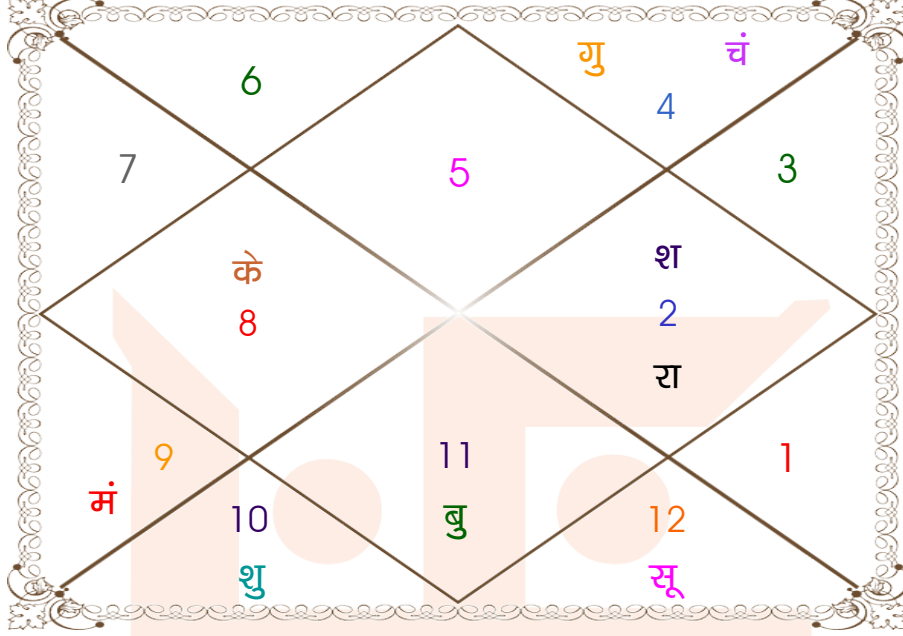
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

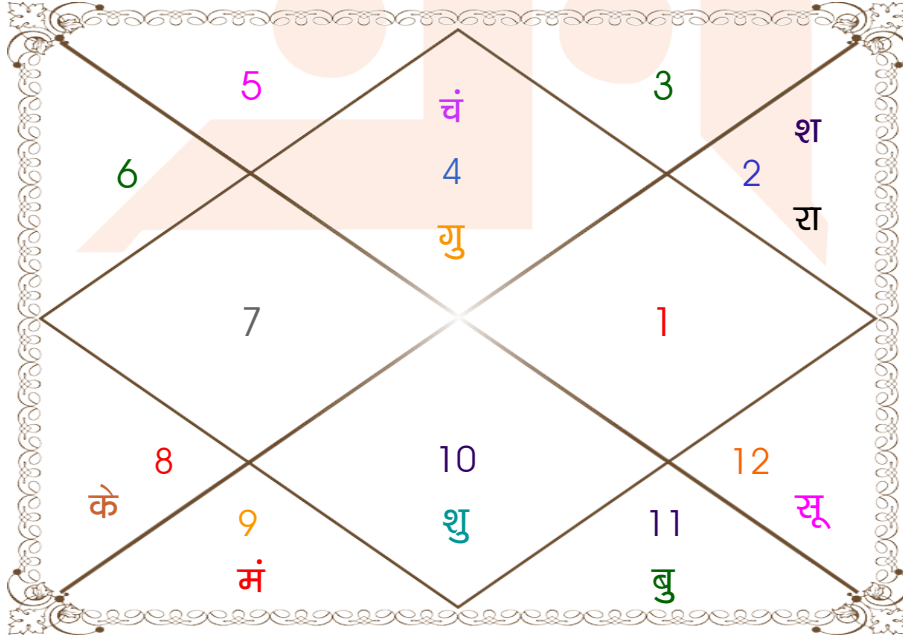
9835195382

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

सू		रा श	
बु			गु चं
शु			ल
मं	के		

लग्न कुंडली

रा श		सू	
		बु	
गु चं		शु	
ल		मं	के

विंशोत्तरी
बुध 12वर्ष 8मा 10दि
बुध

15/03/2003

25/11/2118

बुध	24/11/2015
केतु	24/11/2022
शुक्र	24/11/2042
सूर्य	23/11/2048
चन्द्र	24/11/2058
मंगल	24/11/2065
राहु	24/11/2083
गुरु	24/11/2099
शनि	25/11/2118

योगिनी

भ्रामरी 2वर्ष 11मा 25दि
संकटा

10/03/2024

10/03/2032

संकटा	19/12/2025
मंगला	10/03/2026
पिंगला	20/08/2026
धान्या	20/04/2027
भ्रामरी	10/03/2028
भद्रिका	20/04/2029
उल्का	20/08/2030
सिद्धा	10/03/2032

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

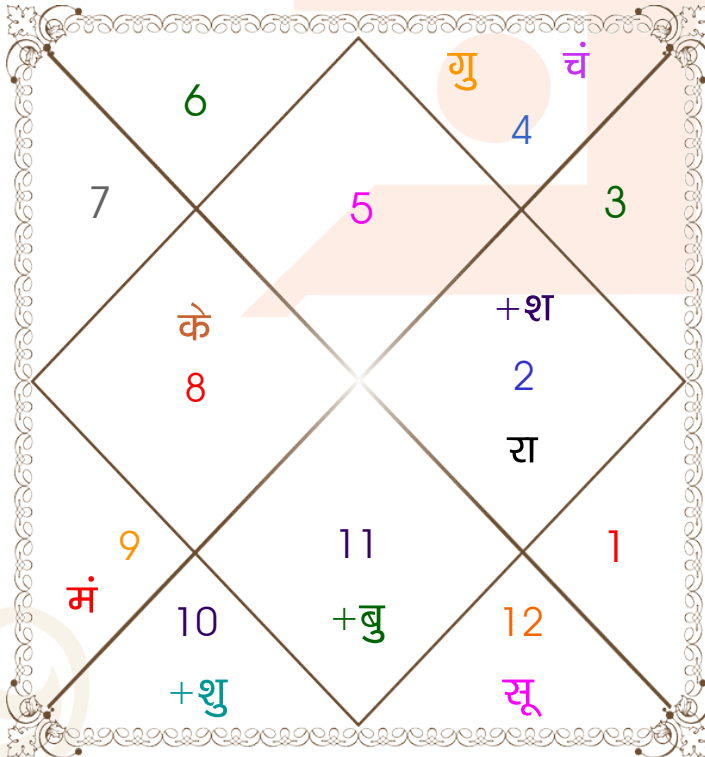
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	06:27:30	324:15:18	मघा	2	10	सूर्य	केतु	राहु	---
सूर्य			मीन	00:32:02	00:59:47	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	चंद्र	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	20:02:34	13:53:14	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	स्वराशि
मंगल			धनु	12:48:32	00:37:59	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	मित्र राशि
बुध	अ		कुंभ	24:25:25	01:52:04	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	सम राशि
गुरु	व		कर्क	14:46:34	00:03:41	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	राहु	उच्च राशि
शुक्र			मक	21:23:28	01:11:23	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि
शनि			वृष	28:39:17	00:02:20	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	मित्र राशि
राहु	व		वृष	08:11:02	00:08:34	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	08:11:02	00:08:34	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	मित्र राशि
हर्ष			कुंभ	06:21:06	00:03:14	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	---
नेप			मक	18:18:02	00:01:48	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	---
प्लूटो			वृश्चि	26:02:13	00:00:16	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	---
दशम भाव			वृष	05:45:14	--	कृतिका	--	3	शुक्र	सूर्य	बुध	--

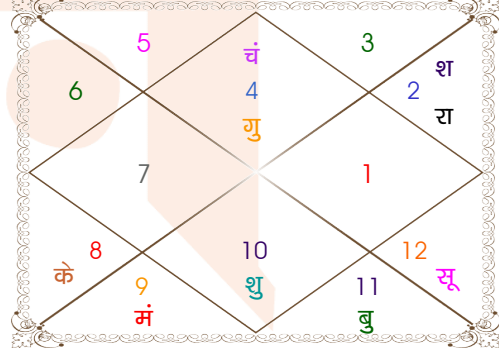
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:53:52

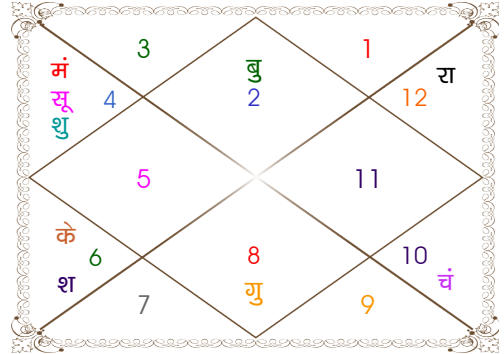
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 21:20:28	सिंह 06:27:30
2	सिंह 21:20:28	कन्या 06:13:25
3	कन्या 21:06:22	तुला 05:59:20
4	तुला 20:52:17	वृश्चिक 05:45:14
5	वृश्चिक 20:52:17	धनु 05:59:20
6	धनु 21:06:22	मकर 06:13:25
7	मकर 21:20:28	कुम्भ 06:27:30
8	कुम्भ 21:20:28	मीन 06:13:25
9	मीन 21:06:22	मेष 05:59:20
10	मेष 20:52:17	वृष 05:45:14
11	वृष 20:52:17	मिथुन 05:59:20
12	मिथुन 21:06:22	कर्क 06:13:25

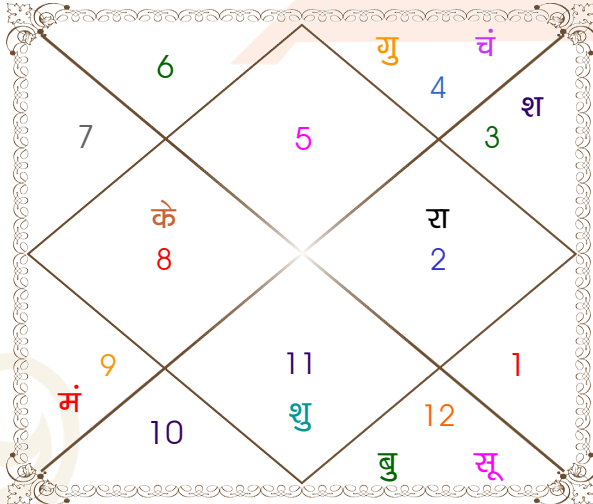
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	06:27:30
2	कन्या	03:38:14
3	तुला	03:59:02
4	वृश्चिक	05:45:14
5	धनु	07:04:10
6	मकर	07:19:24
7	कुम्भ	06:27:30
8	मीन	03:38:14
9	मेष	03:59:02
10	वृष	05:45:14
11	मिथुन	07:04:10
12	कर्क	07:19:24

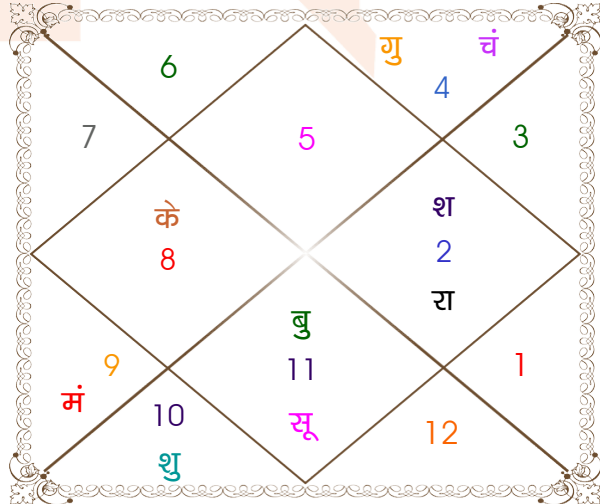
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 12 वर्ष 8 मास 10 दिन

बुध 17 वर्ष 15/03/2003 24/11/2015	केतु 7 वर्ष 24/11/2015 24/11/2022	शुक्र 20 वर्ष 24/11/2022 24/11/2042	सूर्य 6 वर्ष 24/11/2042 23/11/2048	चंद्र 10 वर्ष 23/11/2048 24/11/2058
00/00/0000	केतु 21/04/2016	शुक्र 25/03/2026	सूर्य 14/03/2043	चंद्र 24/09/2049
15/03/2003	शुक्र 21/06/2017	सूर्य 26/03/2027	चंद्र 12/09/2043	मंगल 25/04/2050
शुक्र 17/02/2005	सूर्य 27/10/2017	चंद्र 23/11/2028	मंगल 18/01/2044	राहु 25/10/2051
सूर्य 24/12/2005	चंद्र 28/05/2018	मंगल 24/01/2030	राहु 12/12/2044	गुरु 23/02/2053
चंद्र 26/05/2007	मंगल 24/10/2018	राहु 23/01/2033	गुरु 30/09/2045	शनि 24/09/2054
मंगल 22/05/2008	राहु 12/11/2019	गुरु 24/09/2035	शनि 12/09/2046	बुध 23/02/2056
राहु 09/12/2010	गुरु 18/10/2020	शनि 24/11/2038	बुध 19/07/2047	केतु 24/09/2056
गुरु 16/03/2013	शनि 27/11/2021	बुध 24/09/2041	केतु 24/11/2047	शुक्र 25/05/2058
शनि 24/11/2015	बुध 24/11/2022	केतु 24/11/2042	शुक्र 23/11/2048	सूर्य 24/11/2058
मंगल 7 वर्ष 24/11/2058 24/11/2065	राहु 18 वर्ष 24/11/2065 24/11/2083	गुरु 16 वर्ष 24/11/2083 24/11/2099	शनि 19 वर्ष 24/11/2099 25/11/2118	बुध 17 वर्ष 25/11/2118 00/00/0000
मंगल 22/04/2059	राहु 06/08/2068	गुरु 11/01/2086	शनि 28/11/2102	बुध 23/04/2121
राहु 10/05/2060	गुरु 30/12/2070	शनि 25/07/2088	बुध 07/08/2105	केतु 20/04/2122
गुरु 15/04/2061	शनि 05/11/2073	बुध 31/10/2090	केतु 16/09/2106	शुक्र 16/03/2123
शनि 25/05/2062	बुध 25/05/2076	केतु 06/10/2091	शुक्र 16/11/2109	00/00/0000
बुध 23/05/2063	केतु 12/06/2077	शुक्र 06/06/2094	सूर्य 29/10/2110	00/00/0000
केतु 19/10/2063	शुक्र 12/06/2080	सूर्य 26/03/2095	चंद्र 29/05/2112	00/00/0000
शुक्र 18/12/2064	सूर्य 07/05/2081	चंद्र 25/07/2096	मंगल 08/07/2113	00/00/0000
सूर्य 25/04/2065	चंद्र 06/11/2082	मंगल 01/07/2097	राहु 14/05/2116	00/00/0000
चंद्र 24/11/2065	मंगल 24/11/2083	राहु 24/11/2099	गुरु 25/11/2118	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 12 वर्ष 7 मा 22 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र	शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल	शुक्र - राहु
24/11/2022	25/03/2026	26/03/2027	23/11/2028	24/01/2030
25/03/2026	26/03/2027	23/11/2028	24/01/2030	23/01/2033
शुक्र 15/06/2023	सूर्य 13/04/2026	चंद्र 15/05/2027	मंगल 18/12/2028	राहु 07/07/2030
सूर्य 15/08/2023	चंद्र 13/05/2026	मंगल 20/06/2027	राहु 20/02/2029	गुरु 30/11/2030
चंद्र 24/11/2023	मंगल 03/06/2026	राहु 19/09/2027	गुरु 18/04/2029	शनि 23/05/2031
मंगल 03/02/2024	राहु 28/07/2026	गुरु 09/12/2027	शनि 24/06/2029	बुध 25/10/2031
राहु 04/08/2024	गुरु 15/09/2026	शनि 15/03/2028	बुध 24/08/2029	केतु 28/12/2031
गुरु 13/01/2025	शनि 12/11/2026	बुध 09/06/2028	केतु 18/09/2029	शुक्र 27/06/2032
शनि 25/07/2025	बुध 02/01/2027	केतु 15/07/2028	शुक्र 28/11/2029	सूर्य 21/08/2032
बुध 13/01/2026	केतु 24/01/2027	शुक्र 24/10/2028	सूर्य 19/12/2029	चंद्र 20/11/2032
केतु 25/03/2026	शुक्र 26/03/2027	सूर्य 23/11/2028	चंद्र 24/01/2030	मंगल 23/01/2033
शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि	शुक्र - बुध	शुक्र - केतु	सूर्य - सूर्य
23/01/2033	24/09/2035	24/11/2038	24/09/2041	24/11/2042
24/09/2035	24/11/2038	24/09/2041	24/11/2042	14/03/2043
गुरु 02/06/2033	शनि 25/03/2036	बुध 20/04/2039	केतु 19/10/2041	सूर्य 29/11/2042
शनि 03/11/2033	बुध 05/09/2036	केतु 19/06/2039	शुक्र 29/12/2041	चंद्र 09/12/2042
बुध 21/03/2034	केतु 12/11/2036	शुक्र 08/12/2039	सूर्य 19/01/2042	मंगल 15/12/2042
केतु 17/05/2034	शुक्र 24/05/2037	सूर्य 29/01/2040	चंद्र 23/02/2042	राहु 31/12/2042
शुक्र 27/10/2034	सूर्य 20/07/2037	चंद्र 24/04/2040	मंगल 20/03/2042	गुरु 15/01/2043
सूर्य 14/12/2034	चंद्र 25/10/2037	मंगल 24/06/2040	राहु 23/05/2042	शनि 01/02/2043
चंद्र 05/03/2035	मंगल 31/12/2037	राहु 26/11/2040	गुरु 19/07/2042	बुध 17/02/2043
मंगल 01/05/2035	राहु 23/06/2038	गुरु 13/04/2041	शनि 25/09/2042	केतु 23/02/2043
राहु 24/09/2035	गुरु 24/11/2038	शनि 24/09/2041	बुध 24/11/2042	शुक्र 14/03/2043
सूर्य - चंद्र	सूर्य - मंगल	सूर्य - राहु	सूर्य - गुरु	सूर्य - शनि
14/03/2043	12/09/2043	18/01/2044	12/12/2044	30/09/2045
12/09/2043	18/01/2044	12/12/2044	30/09/2045	12/09/2046
चंद्र 29/03/2043	मंगल 20/09/2043	राहु 07/03/2044	गुरु 20/01/2045	शनि 24/11/2045
मंगल 08/04/2043	राहु 09/10/2043	गुरु 20/04/2044	शनि 07/03/2045	बुध 12/01/2046
राहु 06/05/2043	गुरु 26/10/2043	शनि 11/06/2044	बुध 17/04/2045	केतु 01/02/2046
गुरु 30/05/2043	शनि 15/11/2043	बुध 28/07/2044	केतु 04/05/2045	शुक्र 31/03/2046
शनि 28/06/2043	बुध 03/12/2043	केतु 16/08/2044	शुक्र 22/06/2045	सूर्य 17/04/2046
बुध 24/07/2043	केतु 11/12/2043	शुक्र 10/10/2044	सूर्य 07/07/2045	चंद्र 16/05/2046
केतु 04/08/2043	शुक्र 01/01/2044	सूर्य 26/10/2044	चंद्र 31/07/2045	मंगल 06/06/2046
शुक्र 03/09/2043	सूर्य 07/01/2044	चंद्र 23/11/2044	मंगल 17/08/2045	राहु 28/07/2046
सूर्य 12/09/2043	चंद्र 18/01/2044	मंगल 12/12/2044	राहु 30/09/2045	गुरु 12/09/2046

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	5
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 5
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

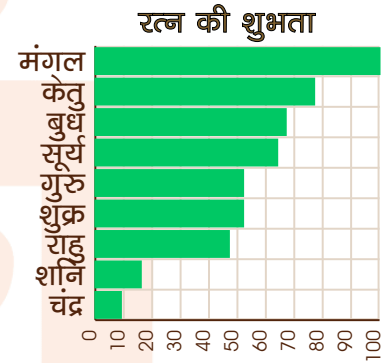
9835195382

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	सन्तति सुख, भाग्योदय, सुख
लहसुनिया	केतु	77%	सुख, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	67%	दम्पति, धनार्जन, धन
माणिक्य	सूर्य	64%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	52%	कम खर्च, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
हीरा	शुक्र	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
गोमेद	राहु	47%	व्यावसायिक हानि, शत्रु व रोग
नीलम	शनि	16%	व्यावसायिक हानि, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	9%	व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	24/11/2015	70%	0%	100%	80%	52%	58%	16%	47%	77%
केतु	24/11/2022	52%	0%	100%	67%	52%	58%	0%	22%	89%
शुक्र	24/11/2042	52%	0%	100%	73%	52%	64%	28%	55%	83%
सूर्य	23/11/2048	77%	21%	100%	67%	58%	28%	0%	22%	64%
चंद्र	24/11/2058	70%	34%	100%	73%	52%	52%	16%	22%	64%
मंगल	24/11/2065	70%	21%	100%	55%	58%	52%	16%	22%	83%
राहु	24/11/2083	52%	0%	89%	67%	52%	58%	28%	61%	64%
गुरु	24/11/2099	70%	21%	100%	55%	64%	28%	16%	47%	77%
शनि	25/11/2118	52%	0%	89%	73%	52%	58%	41%	55%	64%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	व्यय
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः॥

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ॥

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ॥**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति पंचम भाव में है। पंचम भाव संतति उच्चशिक्षा तथा बुद्धि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको जीवन में यथोचित सुख की प्राप्ति होगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। जीवन में आप स्वपरिश्रम एवं बुद्धिबल से उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे यद्यपि इसमें यदा कदा समस्याएं भी उत्पन्न होंगी परन्तु इनका सामना करने में आप सफल रहेंगे। आपकी तीव्र बुद्धि होगी तथा यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृत्ति किसी भी कार्य को शीघ्रता से प्रारंभ करने की रहेगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके संबंध बने रहेंगे तथा उनसे न्यूनाधिक लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

पंचम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप गर्मी पित या रक्त विकार आदि से यदा कदा शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इसके प्रभाव से आपको विशिष्ट या अचानक धन लाभ का भी जीवन में योग बनता है। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी यदा कदा आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा लेकिन उनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ रहेगी इसके प्रभाव से आप जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगे तथा धनवान पुरुष के रूप में जाने जाएंगे। आपके आय स्रोत भी एक से अधिक होंगे तथा सामाजिक मान सम्मान की भी वृद्धि होगी। द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप यदा कदा व्यय अधिक मात्रा में करेंगे जो शुभाशुभ कार्यों में होगा। इससे आपके बाएं नेत्र में कोई निशान या कमजोरी भी हो सकती है। लेकिन दाम्पत्य जीवन का उपभोग आप सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक करते रहेंगे।

इस प्रकार पंचम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में संतति तथा अन्य

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करते हुए अपने दाम्पत्य जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

कालसर्प योग

अग्रे राहुरथः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पस्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, कोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, कोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से

पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

सातवें भाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्वयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान्, ज्योतिषी, राजयोगी, न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्दयोगी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(24/11/2022 - 24/11/2042)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 24/11/2022 को आरम्भ होकर 24/11/2042 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो भावनात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद, मनोरंजन और सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या में निम्न का होता है। आपकी जन्म कुण्डली में यह षष्ठ भाव में स्थित होकर द्वादश भाव को देख रहा है और इस भाव पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् षष्ठ भाव, बीमारी, नौकरी, कर्मचारी, ऋण, शत्रु, मामा, कंजूसी तथा व्यथा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है और इस भाव को प्रबलित कर रहा है। अतः इस दशा काल में आपको कोई दुर्घटना या बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी तथा आप अपना जीवन सामान्य रूप से व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है जो आपकी वित्तीय स्थिति में सुधार लाएगा। आप मुकदमे से संपत्ति बना सकते हैं। आप आरामदेह जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

व्यवसाय :

इस दशा काल में आप दिन-प्रतिदिन के व्यवसाय के लिए कोई नर्सिंग होम आरंभ कर सकते हैं। आप आरामदेह जीवन का आनन्द ले सकेंगे। आपके मामा आपके व्यवसाय में सहायक हो सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

शुक्र षष्ठ भाव में स्त्री का अनुग्रह प्राप्त करने में अनुकूल है। आप इस दशा काल में अत्यंत स्त्री सुख प्राप्त करेंगे। आप इस तरह स्वेच्छाचरी हो जाएँगे और स्त्री के लिए कमजोरी अनुभव करेंगे जो निस्संदेह आपका पक्ष लेगी और आपके जीवन में सहायक होगी। किन्तु इसका आपके पारिवारिक जीवन पर असर पड़ेगा तथा उसे कुछ अव्यवस्थित करेगा। आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

अंतर्दशा :- शुक्र - शुक्र
(24/11/2022 - 25/03/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 24/11/2022 को प्रारंभ होकर 24/11/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 24/11/2022 को प्रारंभ होकर 25/03/2026 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठे भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। शुक्र शुभ ग्रह है और विवाह, प्रेम और रति का कारक है। छठे भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 12वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में विपरीत लिंग के लोग आपकी ओर आकर्षित रहेंगे। चरित्र में गिरावट आ सकती है, जिससे स्वास्थ्य की हानि संभव है। आपका कोई शत्रु नहीं होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।

अंतर्दशा :- शुक्र - सूर्य
(25/03/2026 - 26/03/2027)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 24/11/2022 को प्रारंभ होकर 24/11/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 25/03/2026 को प्रारंभ होकर 26/03/2027 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है और एक शक्तिशाली ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर सूर्य कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके जीवन में बहुत सी अप्रत्याशित घटनाएं अचानक घट सकती हैं, जिनमें से कुछ का प्रभाव पूरे जीवन पर पड़ेगा। फिर भी, इस अवधि में आप एक कुशल वक्ता बनेंगे। निवेश या सट्टेबाजी से कुछ लाभ हो सकता है। जीवन में काफी बाधाएं आएंगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य के निम्न टोटके आजमाएं।

- 1 दूध में शहद डालकर पियें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- 2 गरीबों को आटा, गुड़ और तांबा दान करें।
- 3 सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - चन्द्र
(26/03/2027 - 23/11/2028)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 24/11/2022 को प्रारंभ हुई थी और 24/11/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 26/03/2027 से प्रारंभ होकर 23/11/2028 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

चंद्रमा मस्तिष्क और माता का कारक है।

द्वादश भाव में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के षष्ठ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

द्वादश भाव में चंद्र की स्थिति दुर्बल समझी जाती है क्योंकि यह भाव अशुभ माना जाता है। इस अवधि में आप रहस्य विद्या में रुचि ले सकते हैं; मस्तिष्क में विविध विचार आएंगे। संवेदनशीलता बढ़ने से कष्टों में वृद्धि हो सकती है। विवेश शक्ति कम हो सकती है ; गुप्त शत्रु सबल होंगे।

अति संवेदनशीलता के कारण किसी कांड में फंस सकते हैं। अरिष्ट से बचाव के लिए ज्येष्ठ या श्रावण मास में शुक्ल पक्ष के सोमवार से प्रारंभ कर कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को उपवास करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - मंगल
(23/11/2028 - 24/01/2030)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 24/11/2022 को प्रारंभ होकर 24/11/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 14 मास रहेगी। यह 23/11/2028 को प्रारंभ होकर 24/01/2030 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। मंगल ऊर्जा का कारक है। पंचम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 8, 11, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप क्रोधी और विचलित हो सकते हैं। किसी को धोखा न दें। कंजूसी और मस्तिष्क में दुर्बलता बढ़ सकती है। संतान और जीवनसाथी के लिए भी समय अशुभ हो सकता है। विवेकशक्ति में कमी होगी; जल्दबाजी के कार्यों से बाद में पछताना पड़ेगा।

आपका दिल दिमाग पर हावी रहेगा, भावुकता बढ़ेगी, अच्छी सलाह को अनसुनी कर देंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए ६ रत्ती का मूंगा सोने या तांबे की अंगूठी में मंगलवार के दिन प्रातःकाल दूध से धोकर, हनुमान या गणेश या शिव जी के पूजन के उपरान्त धारण करें।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382